पद १४

(राग: भीमपलास - ताल: भजनी)

सदुरू चरणीं ठेवुनिया भार। चालवी संसार, तोचि निर्भय।।धु.।। चंचल हे मन, न च स्थिरे क्षण। प्रभु पदीं लीन, तोचि निर्भय।।१।। असल्या संतोष, नसल्याचा रोष। खंत नसे लेश तोचि निर्भय।।२।। कुसंगाच्या संगीं, व्यसनाच्या रंगी। निघे जो नि:संगी, तोचि निर्भय।।४।। सिद्धाचा अभंग, प्रभु पांडुरंग। भजनीं जो दंग, तोचि निर्भय।।५।।